नोट्स

स्नातक खण्ड - III, भूगोल (प्रतिष्ठा)

पत्र - V

Unit - I

Q. भूगोल में विडाल डी ला ब्लॉश के योगदान का वर्णन करें?

ब्लाश का जन्म फ्रांस के पेरिस शहर में सन 1845 में हुआ था। ये फ्रांस के नवीन भूगोल के विकास की नींव डालने वाले एक मात्र भूगोलवेता थे। वह सम्भववाद (Possibilism) का कट्टर विरोधी थे इन्हें मानव भूगोल का जन्म दाता कहा जाता है। इन्होंने इतिहास, भूगोल, दर्शन विषय की स्नातक की पढ़ाई Ecole Normale के विख्यात संस्थान से पास की। उन्होंने Ph.D. के शोध हेतु प्लेटो से टॉलमी के काल तक की उपलब्धियों का अध्ययन करने के लिए यूनान गये। ब्लाश ने Ph.D. की उपाधि Ecole Normale से प्राप्त की। ब्लाश ने नेन्सी विश्वविद्यालय में भूगोल के व्याख्याता पद ग्रहण की। इन्होंने यहा 5 वर्षों तक पढ़ाने का कार्य किया। इसके बाद वे जर्मनी चले गये। वहाँ रिटर, हम्बोल्ट, रेटजेल के कार्यों का अध्ययन किया एवं रिचथोफेन से भेंट की। ब्लाश नेन्सी में रहते हुए प्रादेशिक भूगोल पर "La France De Est" नामक ग्रन्थ लिखे। जर्मनी से लौटने के पश्चात 1877 में इनकी नियुक्ति Ecole Normale शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थान पेरिस में हुई। 1898 में इन्हें पदोन्नति कर सोरबान विश्वविद्याल, पेरिस में भूगोल विभाग के प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष पद पर हुई। भूगोल को नई ऊचाई तक पहुचाने के प्रयास हेतु उन्हें 'Chair of Geography' का सम्मान दिया गया। इसी दौरान ब्लाश ने फ्रांस का दौरा किया एवं उसका प्रादेशिक विभाजन किया। ब्लाश एक माने हुए प्रवक्ता थे उनकी भाषा शैली सरल एवं प्रभाव शाली थी। वे जहाँ भी गये अपनी स्थायी छाप छोड़ते गये। ब्लाश भूगोल में निश्चयवाद का विरोध करते हुए संभावनावाद का समर्थन किया। वर्ष 1918 में इनकी मृत्यु हो गयी।

ब्लाश का भूगोल को देन :-

ब्लाश ने भूगोल पर अनेक शोध पत्र एंव कई ग्रन्थ लिखे। उनकी भाषा शैली सरल और प्रभावशाली रही। वह एक माने हुए प्रवक्ता थे यही कारण है कि वह जहाँ गये अपनी स्थाई छाप छोड़ आए। इनकी प्रमुख रचनाएं निम्न हैं:-

(i) - वर्ष 1894 से भूगोल की वार्षिक पत्रिका 'Annals-de-Geographie' का प्रकाशन करते रहे। इसमें भूगोल की सभी शाखाओं, भू-विज्ञान, खनिज विज्ञान, ऐतिहासिक भूगोल आदि पर चिन्तन एवं उदाहरण सहित खोज कार्यों आदि का विवेचना विस्तार से किया गया।

(ii) यूरोप में राष्ट्र राज्य (1889)

(iii) यूरोप के ऐतिहासिक एवं भौगोलिक परिवेश पर तैयार की गयी एटलस (1894)

(iv) फ्रांस का भूगोल (Geographie de la France) (1903)

(v) पूर्वी फ्रांस का भूगोल (France de la Est) (1917)

(vi) 'मानव-भूगोल' मृत्यु के पश्चात (1923)

(vii) 'सामाजिक तथ्यों की भौगोलिक दशाएं' (1902)

ब्लाश का सम्भववादी चिन्तन :- ब्लाश की मान्यता है कि वह अपने परिवेश (environment) का उपयोग स्वयं के अनुभव एवं विकास के स्तर के आधार पर करता है। मानव अपनी क्षमता एवं आवश्यकतानुसार उनका उपयोग कर सकता है। मानव का जहाँ प्रवाहित जल, कटावयुक्त मिट्टी, वृक्ष आदि परिवेश के कुछ तत्वों पर नियंत्रण नहीं है परन्तु कुछ अन्यों पर उसका नियंत्रण है। पर्यावरण में पीढ़ी दर पीढ़ी चलते आ रहे सामूहिक प्रयास के परिणामस्वरूप प्रत्येक क्षेत्र में निवास करने वाला मानव समुदाय सामाजिक और आर्थिक जीवन की एक विशिष्ट अनूठी पद्धति विकसित कर लेता है। इस जीवन पद्धति को ब्लाश ने 'जेनरे-डी-वाई' का नाम दिया।

ब्लाश की प्रदेशों की संकल्पना :- "ऐसा क्षेत्र जिसमें भौतिक और सांस्कृतिक तथ्यों की समरूपता पाई जाती है" मानव समाज, पौधे और पशु जगत के समान ही विभिन्न तत्वों से निर्मित है जो पर्यावरण के द्वारा प्रभावित रहते है। यह कोई नहीं जानता कि कौन सी हवा दोनों को एक साथ लाई, परन्तु वे एक प्रदेश विशेष में एक दूसरे के साथ रहे और उन पर उस प्रदेश के पर्यावरण की छाप पड़ी कुछ समाज अपने पर्यावरण का लम्बे समय से अंग रहे है जबकि कुछ समाज अभी निर्माण की अवस्था में है और दिन पर दिन परिवर्तित हो रहा है।

उक्त पंक्ति से स्पष्ट होता है कि ब्लाश ने "क्षेत्रिय सम्पूर्णता" (Terrestrial whole) के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया उनका विश्वास था कि पृथ्वी और उसके निवासी अन्योनय सम्बंधों में निकटता से बंधे हुए है और कोई एक सही रूप में उसके समस्त सम्बंधों में दूसरे के बिना प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner